थेस्सलोनिकी के प्रथम पत्र का लेखक और धार्मिक परिचय

थेस्सलोनिकी के प्रथम पत्र की शुरुआत में इसे “प्रभु के प्रेरित पौलुस का थेस्सलोनिकी के लोगों के लिए पहला पत्र” कहा गया है। इस पत्र के लेखक पौलुस हैं, जो इसे कोरिंथ में लिख रहे थे। हमें यह इसलिये पता चलता है क्योंकि थिमोथियुस मकदूनिया से समाचार लेकर आया था, जिसमें उसने थेस्सलोनिकी की सभा की आध्यात्मिक प्रगति के बारे में उत्साहवर्धक जानकारी दी थी, जिसमें उनके विश्वास, प्रेम और आशा में वृद्धि शामिल थी, जैसा कि प्रेरितों के काम 18 में वर्णित है।

थेस्सलोनिकी के लोगों तक पहुंचने में कठिनाइयों और शैतान के विरोध के कारण, पौलुस को ये दो पत्र लिखने पड़े ताकि वे उन्हें उपदेश दे सकें, प्रोत्साहित कर सकें और विभिन्न समस्याओं का समाधान कर सकें। ये पत्र एक-दूसरे से कुछ महीनों के अंतराल पर लिखे गए थे।

यह पत्र पांच अध्यायों में विभाजित है। इस पत्र के मुख्य विषय तीन बिंदुओं में संक्षेपित किए जा सकते हैं:

1. विश्वास में दृढ़ रहने के लिए संतों को प्रोत्साहित करना, खासकर दुःख के समय में।
2. विश्वासियों के उचित आचरण के बारे में निर्देश देना।
3. मसीह के दूसरे आगमन और मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में प्रश्नों का उत्तर देना।

अब हम इन विषयों को विस्तार से देखें:

1) विश्वास में दृढ़ता (कष्ट के बीच)
पौलुस थेस्सलोनिकी के लोगों को याद दिलाते हैं कि उन्हें सुसमाचार सुनाने के दौरान उन्होंने खुद कितने कष्ट सहे और वे भी जो खुद सह रहे थे। इन परीक्षाओं के बावजूद वे उन्हें हिम्मत नहीं हारने और अपने विश्वास को न छोड़ने के लिए कहते हैं। वे यह भी बताते हैं कि कष्ट ईसाई जीवन का हिस्सा हैं और उन्हें अपने विश्वास में अडिग बने रहना चाहिए।

1 थेस्सलोनिकी 2:14 में लिखा है:

“क्योंकि भाइयो, तुम मसीह येशु में यहूदिया के परमेश्वर की सभाओं के अनुकरणहार हो गए, क्योंकि तुमने भी अपने ही लोगों
से वही कष्ट सहा जो उन्होंने यहूदियों से सहा।”

और 1 थेस्सलोनिकी 3:3 में वे कहते हैं:

“ताकि कोई इन कष्टों से हिला न दे; क्योंकि तुम जानते हो कि

हमें इसके लिए चुना गया है।”

पौलुस का संदेश स्पष्ट है: कष्ट विश्वासियों के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा हैं, और उन्हें हतोत्साहित करने के बजाय विश्वास में मजबूत करना चाहिए।

2) विश्वासियों का अपेक्षित आचरण (पवित्र जीवन)
इस पत्र का दूसरा प्रमुख विषय यह है कि मसीह में प्राप्त बुलाहट के योग्य जीवन जिया जाए। पौलुस कई महत्वपूर्ण पक्षों पर जोर देते हैं:

प्रेम और पवित्रता: वे उन्हें एक-दूसरे और सभी लोगों के प्रति प्रेम बढ़ाने के लिए कहते हैं, जैसे उन्होंने अपने आप में प्रेम दिखाया था। यह प्रेम उन्हें परमेश्वर के सामने निर्दोष और पवित्र जीवन जीने की ओर ले जाना चाहिए।

1 थेस्सलोनिकी 3:12-13 में पौलुस प्रार्थना करते हैं:

“और परमेश्वर तुम्हें प्रेम में बढ़ा दे और परिपूर्ण करे,
जैसा कि हम तुमसे प्रेम करते हैं, ताकि वह तुम्हारे हृदयों को हमारे परमेश्वर और पिता के सामने मसीह येशु के आने पर पवित्रता में निर्बाध बनाए रखे।”

शरीर का संयम और यौन शुद्धता: पौलुस कहते हैं कि विश्वासियों को यौन शुद्धता और आत्म-नियंत्रण में रहना चाहिए, और उन कामनाओं से बचना चाहिए जो परमेश्वर की इच्छा के खिलाफ हों (1 थेस्सलोनिकी 4:3-5)।

परिश्रम और ईमानदारी: विश्वासियों को शांतिपूर्ण जीवन बिताना चाहिए, अपने हाथों से काम करना चाहिए, और बाहरी लोगों के प्रति उचित व्यवहार रखना चाहिए। ऐसा करने से वे दूसरों पर निर्भर नहीं होंगे और अपनी ईमानदारी बनाए रखेंगे।

1 थेस्सलोनिकी 4:11-12 में लिखा है:

“और शांति से जीवन यापन करने की कोशिश करो, अपने कामों में

व्यस्त रहो, और अपने हाथों से काम करो, जैसा कि हमने तुम्हें

आदेश दिया है, ताकि तुम बाहरी लोगों के सामने उचित आचरण करो

और किसी पर आश्रित न रहो।”

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना: ईसाइयों को एक-दूसरे का सहारा और उत्साहवर्धन करने के लिए कहा गया है ताकि वे विश्वास में दृढ़ रहें (1 थेस्सलोनिकी 5:14-15)।

नेताओं का सम्मान: पौलुस यह भी कहते हैं कि जो सेवा और नेतृत्व में लगे हैं, उन्हें सम्मान और उनकी मेहनत को मान्यता दी जानी चाहिए (1 थेस्सलोनिकी 5:12-13)।

3) मसीह का दूसरा आगमन और मृतकों का पुनरुत्थान

पत्र के तीसरे भाग में पौलुस उन प्रश्नों का उत्तर देते हैं जो

थेस्सलोनिकी के लोगों को मसीह के दूसरे आगमन और मर चुके विश्वासियों के भाग्य को लेकर थे। वे चिंतित थे कि जो पहले मर चुके हैं, वे मसीह के वापस आने से वंचित न रह जाएं। पौलुस उन्हें आश्वासन देते हैं।

1 थेस्सलोनिकी 4:13-16 में लिखा है:

“हम चाहते हैं कि तुम उन लोगों के विषय में अनजान न रहो जो
सोए हुए हैं, ताकि तुम अन्य लोगों की तरह उदास न हो, जिन्हें
कोई आशा नहीं है। क्योंकि यदि हम मानते हैं कि येशु मरा और
फिर जीवित हुआ, तो परमेश्वर भी येशु के द्वारा उन लोगों को, जो सोए हुए हैं, अपने साथ लाएगा। यह हम तुम्हें प्रभु के वचन द्वारा कहते हैं कि हम जिनके पास जीवित रहकर प्रभु के आने तक समय होगा, वे पहले सोए हुए लोगों से आगे नहीं निकलेंगे। क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ग से एक आज्ञापूर्ण स्वर, एक स्वर्गदूत की आवाज और परमेश्वर के तुरही की आवाज़ के साथ उतरेगा, और मसीह में मर चुके पहले जी उठेंगे।”

पौलुस थेस्सलोनिकी के लोगों को आश्वस्त करते हैं कि मसीह में मरने वाले भूले नहीं जाएंगे। वे पहले जी उठेंगे, और जीवित विश्वासियों के साथ मिलकर प्रभु से मिलने के लिए आकाश में उठाए जाएंगे। यह वादा विश्वासियों के लिए महान आशा का स्रोत है,

क्योंकि यह पुनरुत्थान और अनंत जीवन की गारंटी देता है।

साथ ही, पौलुस बताते हैं कि मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा। वे इसे चोर के आने जैसा बताते हैं, जो रात को आता है, जबकि लोग “शांति और सुरक्षा” की बात कर रहे होते हैं (1 थेस्सलोनिकी 5:2-3)।

1 थेस्सलोनिकी 5:6-8 में वे कहते हैं:

“इसलिए हम दूसरों की तरह न सोएं, बल्कि जागते और होशियार
रहें। क्योंकि जो सोते हैं, वे रात में सोते हैं, और जो नशे
में होते हैं, वे रात में नशे में होते हैं। परन्तु हम दिन के हैं, इसलिए होशियार रहें, विश्वास और प्रेम का कवच पहनें और उद्धार की आशा का शिरस्त्राण।”

यह आध्यात्मिक सतर्कता और पवित्रता के साथ जीवन जीने की आवश्यकता पर बल देता है, जब वे मसीह के वापस आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

निष्कर्ष

संक्षेप में, थेस्सलोनिकी का प्रथम पत्र विश्वासियों को उनके विश्वास में स्थिर रहने, पवित्र जीवन जीने, और आशा तथा सतर्कता के साथ मसीह के लौटने की प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। पौलुस उन्हें सुसमाचार के लिए होने वाले कष्ट सहने, मसीह के प्रेम और पवित्रता को प्रतिबिंबित करने वाले जीवन जीने, और प्रभु के अचानक आने के लिए तैयार रहने का आह्वान करते हैं।

यह पत्र कठिनाइयों से भरी इस दुनिया में ईसाइयों के लिए अपनी आस्था जीवित रखने, पवित्रता में बढ़ने और मसीह के लौटने की उम्मीद में दृढ़ रहने की अमर शिक्षा प्रदान करता है। यह परमेश्वर की कृपा के प्रकाश में जीने और यह सुनिश्चित करने का आह्वान है कि हमारा आचरण, हमारा मनोभाव और हमारा जीवन उसकी इच्छा के अनुसार हो, जब तक हम अपने उद्धारकर्ता की महिमामय वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

यह पत्र सभी विश्वासियों को सच्चाई से जीने और यीशु मसीह की वापसी में गहरी आशा रखने के लिए प्रेरित और चुनौती देता रहे।

शालोम।

Share on:
WhatsApp